भौगोलिक संकेत

भौगोलिक संकेत एक टैग है जिसका इस्तेमाल प्राकृतिक या मानव निर्मित उत्पादों पर किया जाता है, जो किसी देश में किसी विशेष क्षेत्र या भौगोलिक मूल क्षेत्र से जुड़ा होता है। जीआई टैग कृषि, हस्तशिल्प, खाद्य सामग्री या निर्मित वस्तुओं जैसे उत्पादों की एक विस्तृत श्रृंखला को दिया जा सकता है। जीआई टैग उत्पाद की बौद्धिक संपदा की एक स्वीकृति है।

भौगोलिक संकेत और विश्व व्यापार संगठन:

विश्व व्यापार संगठन ने 1994 के बौद्धिक संपदा अधिकार (ट्रिप्स) समझौते के व्यापार संबंधित पहलुओं के तहत जीआई का उल्लेख और वर्णन किया है, जो अन्य लोगों के बीच पेटेंट, ट्रेडमार्क, कॉपीराइट और औद्योगिक डिजाइन के विषय में भी बताता है।

बौद्धिक संपदा अधिकारों के व्यापार संबंधी पहलुओं (ट्रिप्स) समझौते के अनुच्छेद 22 (1) में भौगोलिक संकेतों को परिभाषित किया गया है: "संकेत किसी क्षेत्र, या उस क्षेत्र में किसी इलाके में उत्पन्न होने वाली वस्तुओं या उत्पादों की पहचान करते हैं। इन उत्पादों की गुणवत्ता, विशिष्ट विशेषता एवं प्रतिष्ठा भी इसी मूल क्षेत्र के कारण होती है। इस तरह का संबोधन उत्पाद की गुणवत्ता और विशिष्टता का आश्वासन देता है।

भारत में भौगोलिक संकेत:

- जीआई को वस्तुओं का भौगोलिक संकेतक (पंजीकरण और संरक्षण) अधिनियम, 1999 के अधिनियमन के तहत भारत में कानूनी मान्यता मिली। यह 15 सितंबर, 2003 को लागू हुआ।
- दार्जिलिंग चाय 2004 में जीआई टैग पाने वाला पहला भारतीय उत्पाद बन गया। भारत में अब तक साढ़े तीन सौ से अधिक वस्तुओं को भौगोलिक संकेत का टैग मिला है।
- जीआई टैग भौगोलिक संकेत रजिस्ट्री द्वारा प्रदान किया जाता है जो कि उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के अधीन है।
- जीआई टैग 10 वर्षों की अवधि के लिए सामूहिक अधिकार प्रदान करता है।

Follow us on Telegram
Gradeup: PCS & State Exams
137K subscribers
Subscribe Now

जीआई टैग के फायदे:

- यह गुणवत्ता को नियंत्रित करने में मदद करता है और मूल उत्पाद के नाम पर खराब गुणवत्ता वाले उत्पादों की साहित्यिक चोरी, मार्केटिंग और धोखाधड़ी को रोकता है। वस्तुओं का भौगोलिक संकेत (पंजीकरण और संरक्षण) अधिनियम, 1999 इसे कानूनी संरक्षण देता है।
- भौगोलिक संकेत एक क्षेत्र के लिए विशिष्ट होते हैं। इसका मतलब है कि वे अपने उत्पादन में शामिल लोगों के जलवायु, जैविक, स्थलाकृतिक, शैक्षिक परिस्थितियों या विशिष्ट पारंपरिक कौशल के लिए विशिष्ट हैं। ये कारक सामूहिक रूप से अंतिम उत्पाद को वे विशेषताएं देते जो इसके लिए अद्वितीय हैं। जीआई टैग बिना किसी बदलाव के इसके संरक्षण और निरंतरता में मदद करता है।
- जीआई टैग ऐसे उत्पादों की मांग बनाने और बढ़ाने में मदद करते हैं क्योंकि टैग ग्राहकों के लिए उत्पाद की प्रामाणिकता सुनिश्चित करता है।
- यह उत्पादों के निर्माण और उत्पादन में शामिल लोगों के लिए लाभकारी रोजगार पैदा करने में मदद करता है।
- जीआई टैग राज्य और राष्ट्रीय दोनों सीमाओं पर उत्पाद के विपणन को बेहतर बनाने में मदद करते हैं। इस प्रकार, यह निर्यात बढ़ाने और मूल्यवान विदेशी मुद्रा उत्पन्न करने में मदद कर सकता है।
- जीआई टैग आदिवासी वस्तुओं, विशेष रूप से हस्तशिल्प के बेहतर विपणन के माध्यम से आदिवासी विकास में बहुत मदद कर सकते हैं।
- यह विविध सांस्कृतिक विरासत के साथ-साथ भारत के लोगों के पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित करने में मदद करता है।

भारत में हाल ही में दिए गए जीआई टैग:

अप्रैल, 2020 से मार्च 2021 तक:

राज्य/संघ राज्य क्षेत्र	**भौगोलिक संकेत**	**उत्पाद**
जम्मू और कश्मीर	केसर(लाचा, मोंगरा और गुच्छी)	कृषि
झारखंड	सोहराई खोवर पेंटिंग	हस्तशिल्प
मणिपुर	चाक-हाओ चावल	कृषि
तमिलनाडु	कोविलपट्टी कदलाई मित्तई	खाद्य सामग्री
तमिलनाडु	तंजावुर नेट्टी कृति	हस्तशिल्प
तमिलनाडु	अरुंबवुर लकड़ी की नक्काशी	हस्तशिल्प
तेलंगाना	तेलिया रुमाल	हस्तशिल्प

Follow us on Telegram
Gradeup: PCS & State Exams
137K subscribers
Subscribe Now

उत्तर प्रदेश	गोरखपुर टेराकोटा	हस्तशिल्प

कश्मीरी केसर:

- सौंदर्य प्रसाधन और दवा में उपयोग किया जाने वाला विश्व स्तर पर प्रसिद्ध मसाला।
- भारत ईरान के बाद विश्व में केसर का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है।
- कश्मीरी केसर तेज सुगंध, प्राकृतिक गहरे लाल रंग, कड़वा स्वाद और जैविक प्रसंस्करण का दावा करता है।
- कश्मीर केसर दुनिया के सभी केसरों में सबसे अधिक ऊंचाई पर उगाया जाता है।
- कश्मीर घाटी के झीले के निक्षेप में इसे उगाया जाता है, जो केसर को इसकी अनूठी विशेषताएं प्रदान करता है।
- प्रसंस्करण के आधार पर केसर के 3 प्रकार होते हैं: लच्छा केसर, मोंगरा केसर, गुच्छी केसर
- केसर को संस्कृत में "बहुकम" कहा जाता है।

सोहराई खोवर पेंटिंग:

- यह 5700 साल से अधिक पुरानी एक पारंपरिक पेंटिंग है, जो झारखंड की आदिवासी महिलाओं द्वारा विशेष रूप से हजारीबाग क्षेत्र में बनाई जाती है।
- सोहराई पेंटिंग फसल से जुड़ी है और बारिश के मौसम के बाद घरों की मिट्टी की दीवारों पर की जाती है।
- खोवर पेंटिंग शादी से जुड़ी हुई है और इसका उपयोग उन कक्षों को सजाने के लिए किया जाता है जहां शादी की जाती है।
- पेंटिंग में प्राकृतिक रंगों जैसे लाल गेरू, पीला गेरू, सफेद गेरू और काला गेरू का उपयोग होता है।
- पेंटिंग उंगलियों, टहनियों, कपड़े के ब्रश और कंघी के टूटे हुए टुकड़ों का उपयोग करके बनायी जाती है।
- चित्रों के रूपांकन वन जीवन से बहुत अधिक प्रभावित होते हैं।

चाक-हाओ चावल:

- यह सुगंधित चिपचिपा चावल है जिसमें बहुत अधिक पौष्टिक तत्व होते है और यह एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर होता है।
- मणिपुर में इसकी खेती सदियों से होती आ रही है।
- यह पारंपरिक चिकित्सा का हिस्सा है।
- इसका सेवन सामुदायिक दावतों के दौरान और "चखाओ खीर" के रूप में किया जाता है।

कोविलपट्टी कदलाई मित्तई:

- यह मूंगफली और कद्दूकस किए हुए नारियल को अलग-अलग रंगों में गुड़ की चाशनी से चिपका कर बनाया जाने वाला एक मीठा व्यंजन है।
- यह टूथुकुडी जिले के कोविलपट्टी और अन्य क्षेत्रों में निर्मित होता है।

तंजावुर नेट्टी कृति:

- इसे एशिनोमीन एस्पेरा नाम के दलदली पौधे के गूदे से बनाया जाता है।
- पारंपरिक कलाकृति को तंजावुर, कुंभकोणम, पुदुकोट्टई के कारीगरों द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित किया जाता है।
- यह बृहदेश्वर मंदिर में भी पाया जा सकता है।

अरुंबवुर लकड़ी की नक्काशी:

Follow us on Telegram
Gradeup: PCS & State Exams
137K subscribers
Subscribe Now

- इसे पेरम्बलुर क्षेत्र के कारीगरों द्वारा बनाया जाता है।
- यह आम के लकड़ी के लट्ठों, लिंगम के पेड़, भारतीय ऐश वृक्ष, रीज़ की लकड़ी और नीम से बनाया जाता है।
- पूरी मूर्ति एक लकड़ी के ब्लॉक पर बनाई जाती है।

तेलिया रुमाल:

- यह नलगोंडा जिले के पुट्टपका में बनाया जाता है। पहले रूमाल पर बुनाई की जाती थी लेकिन अब साड़ी, दुपट्टे और चादर पर भी की जाती है।
- यह एक अनूठी टाई और डाई तकनीक द्वारा बनाया जाता है जिसमें धागे की कोमलता बनाए रखने के लिए तेल का इस्तेमाल किया जाता है और इसका एक अलग गंध होता है।
- आकृतियां ज्यामितीय और वानस्पतिक डिजाइनों से लेकर आलंकारिक तत्वों जैसे शेर, हाथी और हवाई जहाज तक होती हैं।

गोरखपुर टेराकोटा:

- यह उत्तर प्रदेश में गोरखपुर जिले के भाठत क्षेत्र में पाई जाने वाली विशेष मिट्टी से बनाया जाता है।
- यह पारंपरिक कला है जो सदियों से इस क्षेत्र के कुम्हारों द्वारा प्रचलित है।
- हाथ से लगाए गए अलंकरण के साथ हाथी, घोड़ा, ऊंट जैसी जानवरों की आकृतियां आम हैं।

अप्रैल, 2019 से मार्च, 2020 तक प्रदान किए गए जीआई टैग:

राज्य/संघ राज्य क्षेत्र	भौगोलिक संकेत	उत्पाद
अरुणाचल प्रदेश	इडु मिश्मी वस्त्र	हस्तशिल्प
असम	काजी नेमू	कृषि
असम	चोकुवा चावल	कृषि
गोवा	खोला मिर्च	कृषि
आयरलैंड	आयरिश व्हिस्की	विनिर्मित
कर्नाटक	गुलबर्गा तूर दाल	कृषि
केरल	तिरूर वेट्टीला (पान का पत्ता)	कृषि
मिजोरम	पांडम	हस्तशिल्प
मिजोरम	न्गोतेखेर	हस्तशिल्प

Follow us on Telegram
Gradeup: PCS & State Exams
137K subscribers
Subscribe Now

मिजोरम	हमाराम	हस्तशिल्प
मिजोरम	तवल्होपुआन	हस्तशिल्प
मिजोरम	मिज़ो पुआंचेई	हस्तशिल्प
ओडिशा	कंधमाल हल्दी	कृषि
ओडिशा	ओडिशा का रसगुल्ला	खाद्य सामग्री
तमिलनाडु	कोडाइकनाल मलाई पुंडु	कृषि
तमिलनाडु	पलानी पंचामृतम	खाद्य सामग्री
तमिलनाडु	डिंडीगुल का ताला	विनिर्मित
तमिलनाडु	कंडांगी साड़ी	हस्तशिल्प
तमिलनाडु	श्रीविल्लीपुत्तूर पालकोवा	खाद्य सामग्री

इडु मिश्मी वस्त्र:

- यह लोहित, निचली दिबांग घाटी और दिबांग घाटी के इडु मिश्मी (मिश्मी की एक उप जनजाति) द्वारा बनाया जाने वाला एक हथकरघा उत्पाद है।
- यह मुख्य रूप से जनजातीय समुदाय की महिलाओं द्वारा बुना जाता है।
- इडु मिश्मी वस्त्रों के पैटर्न प्रकृति से प्रेरित हैं और इसमें जटिल ज्यामितीय डिजाइन शामिल हैं।

काजी नेमू (नींबू):

- यह पूरे असम में उगाया जाता है और यह हल्के हरे से पीले रंग एवं अनोखे बेलनाकार आकार का होता है।
- इसकी विशिष्ट सुगंध होती है और यह काले धब्बों, स्कर्वी के उपचार में मदद करती है और इसमें बुढ़ापा रोधी गुण होते हैं।
- यह सामान्य नींबू से काफी बड़ा होता है।

चोकुवा चावल:

- यह असम में सर्दियों में उगाई जाने वाली एक अर्ध चिपचिपा चावल की किस्म है।

Follow us on Telegram
Gradeup: PCS & State Exams
137K subscribers
Subscribe Now

- इसे 'कोमल शाऊल' के नाम से भी जाना जाता है। चोकुवा चावल विशेष रूप से सामाजिक और धार्मिक समारोहों में असमिया संस्कृति का एक अभिन्न अंग है।

खोला मिर्च:

- यह अपने अनोखे लाल रंग और मध्यम तीखे स्वाद के लिए प्रसिद्ध है।
- खोला मिर्च या खोलची मिर्ची केवल वर्षा आधारित जलवायु में कानाकोना क्षेत्र के खोला गांव के पहाड़ी ढलानों पर उगाई जाती है।

आयरिश व्हिस्की:

- भारत दुनिया का सबसे बड़ा व्हिस्की बाजार है और भारत में आयरिश व्हिस्की की खपत 2018 में दोगुनी हो गई।
- जीआई टैग प्राप्त आयरलैंड में उत्पादित व्हिस्की भारत में आयरिश व्हिस्की के नाम से बेची जाती है।

गुलबर्गा तूर दाल:

- गुलबर्गा तूर दाल जिसे 'कलबुर्गी लाल चना' के नाम से भी जाना जाता है, मुख्य रूप से स्थानीय मिट्टी में उच्च कैल्शियम और पोटेशियम सामग्री के कारण दुनिया भर में अपनी बेहतर गुणवत्ता के लिए जानी जाती है।
- तूर हैदराबाद और कर्नाटक के शुष्क आंतरिक क्षेत्र की मुख्य खरीफ फसल है, जिसमें 35% से अधिक अकेले कलबुर्गी जिले में उगाई जाती है।

तिरूर वेट्टीला:

- केरल के मल्लापुरम जिले में तिरूर और आसपास के क्षेत्रों में उगाया जाने वाला यह पान का पत्ता अपनी उच्च प्रोटीन और क्लोरोफिल सामग्री के कारण अनोखा है।
- इसकी पौष्टिक पत्तियों में एंटी कार्सिनोजेनिक और एंटी माइक्रोबियल गुणों के साथ एक अलग सुगंध और स्वाद होता है।

जीआई टैग प्राप्त अगले 5 उत्पाद मिजोरम के पारंपरिक शॉल हैं।

पांडम

- यह शोक के प्रतीक के रूप में अंतिम संस्कार के अवसर पर पहना जाता है।

न्गोतेखेर:

- यह एक लोकप्रिय मिजो शॉल है जिसे विशेष अवसरों पर पहना जाता है।
- इस पर मिजोरम की हमार जनजाति द्वारा दावा किया जाता है।

हमाराम:

- हमार जनजाति द्वारा तैयार एक और शॉल, हमाराम भी विशेष अवसरों पर ही पहना जाता है।

तवल्होपुआन:

- मिजोरम के सभी पून (शॉल) के बीच इसका एक अनूठा सांस्कृतिक महत्व है।

Follow us on Telegram
Gradeup: PCS & State Exams
137K subscribers
Subscribe Now

- यह मिज़ो पुरुषों के बीच बेहद साहसी योद्धाओं द्वारा उनकी बहादुरी के प्रतीक के रूप में विशेष रूप से पहना जाता है।

मिज़ो पुआंचेई

- यह सभी मिज़ो शॉलों में सबसे रंगीन है और कमर के चारों ओर लपेटकर पहना जाता है।

कंधमाल हल्दी:

- कंधमाल हांडी ओडिशा के कंधमाल जिले की देशी हल्दी की एक किस्म है।
- यह अपने औषधिय गुणों और विशिष्ट सुगंध के लिए जाना जाता है।

ओडिशा का रसगुल्ला:

- दोनों राज्यों के बीच दावों की तेज लड़ाई के बाद पश्चिम बंगाल को अपने रसगुल्ला के लिए जीआई टैग मिलने के दो साल बाद ओडिशा रसगुल्ला को जीआई टैग मिला।
- पश्चिम बंगाल के रसगुल्ला की तुलना में ओडिशा का रसगुल्ला अपेक्षाकृत नरम और रसदार होता है।

कोडाइकनाल मलाई पुंडु:

- यह लहसुन की प्रजाति है जो सफेद से हल्के पीले रंग की होती है।
- कोडाइकनाल पहाड़ियों में उगाया जाने वाला यह लहसुन अपने औषधीय और रक्षक गुणों के लिए जाना जाता है, क्योंकि इसमें ऑर्गनोसल्फर, फिनोल और फ्लेवोनोइड का उच्च प्रतिशत होता है।

डिंडीगुल का ताला:

- डिंडीगुल क्षेत्र में अधिक मात्रा में लोहा पाया जाता है जिसके कारण यह ताला के निर्माता के रूप में विकसित हुआ।
- डिंडीगुल के ताले अपनी गुणवत्ता और मजबूती के लिए इतने प्रसिद्ध हैं कि डिंडीगुल को 'ताले का शहर' के नाम से जाना जाता है।

कंडांगी साड़ी:

- यह तमिलनाडु में शिवगंगा जिले के कराईकुडी क्षेत्र में हाथ से निर्मित किया जाता है।
- कंडांगी साड़ियों की विशेषता चौड़े बॉर्डर और चमकीले रंग होते हैं।

श्रीविल्लीपुत्तूर पालकोवा:

- यह तमिलनाडु की एक पारंपरिक मिठाई है जिसे दूध को गाढ़ा पेस्ट बनने तक उबाल कर बनाया जाता है।
- इस मिठाई की अनूठी विशेषता यह है कि यह तमिलनाडु में विरुधुनगर जिले के श्रीविल्लीपुत्तूर के आसपास गायों के दूध से ही बनाई जाती है।
- यहां का दूध प्राकृतिक रूप से मीठा होता है और इसलिए मिठाई बनाने के लिए चीनी की बहुत कम आवश्यकता होती है।

Gradeup

Follow us on Telegram
Gradeup PCS & Other State Exams
Gradeup: PCS & State Exams
137K subscribers
Subscribe Now